जगद्गुरु श्रीअग्रदेवाचार्य विरचिता 'श्री राममन्त्रराज परम्परा'

श्री अग्रदास उवाच-

शुभासने समासीनमनन्तानन्दमच्युतम्। कृष्णदासो नमस्कृत्य पप्रच्छ गुरुसंततिम्।।

श्रीकृष्णदास उवाच-

भगवन् यमिनां श्रेष्ठ! प्रपन्नोस्मि दयां कुरु।
ज्ञातुमिच्छाम्यहं सर्वां पूर्वेषां सत्परम्पराम्।।
मन्त्रराजश्च नेनादौ प्रोक्तः कस्मै पुरा विभो।
कथञ्च भुवि विख्यातो मन्त्रोऽयं मोक्षदायकः।।

श्रीअग्रदास उवाच-

कृष्णदासवचः श्रुत्वाऽनन्तानन्दो दयानिधिः।
उवाच श्रूयतां सौम्य! वक्ष्यामि तद् यथाक्रमम्।।

श्री अनन्तानन्द उवाच-

परधाम्नि स्थितो रामः पुण्डरीकायतेक्षणः।
सेवया परया जुष्टो जानक्यै तारकं ददौ।।
श्रियः श्रीरपि लोकानां दुःखोद्धरणहेतवे।
हनूमते ददो मन्त्रं सदा रामाङ्घ्रिसेविने।।
ततस्तु ब्रह्मणा प्राप्तो मुह्यमानेन मायया।
कल्पान्तरे तु रामो वै ब्रह्मणे दत्तवानिमम्।।

मन्त्रराजजपं कृत्वा धाता निर्मातृतां गतः।
त्रयीसारमिमं धातुर्वशिष्ठो लब्धवान् परम्।।
पराशरो वशिष्ठाच्च सर्वसंस्कारसंयुतम्।
मन्त्रराजं परं लब्ध्वा कृतकृत्यो बभूव ह।।
पराशरस्य सत्पुत्रो व्यासः सत्यवती सुतः।
पितुः षडक्षरं लब्धवा चक्रे वेदोपबृंहणम्।।
व्यासोऽपि वहुशिष्येषु मन्वानः शुभयोग्यताम्।
परम हंसवर्य्याय शुकदेवाय दत्तवान्।।
शुकदेव कृपापात्रो ब्रह्मचर्यव्रतेस्थितः।
नरोत्तमस्तु तच्छिष्यो निर्वाण पदवीं गतः।।
स चापि परमाचार्यो गङ्गाधराय सूरये।
मन्त्राणां परमं तत्वं राममन्त्रं प्रदत्तवान्।।
गङ्गाधरात् सदाचार्यस्ततो रामेश्वरो यतिः।
द्वारानन्दस्ततो लब्ध्वा परब्रह्मरतोऽभवत्।।
देवानन्दस्तु तच्छिष्यः श्यामानन्दस्ततोऽग्रहीत्।
तत्सेवया श्रुतानन्दश्चिदानन्दस्ततोऽभवत्।।
पूर्णानन्दस्ततो लब्ध्वा श्रियानन्दाय दत्तवान्।
हर्यानन्दो महायोगी श्रियानन्दाङ्घ्रि सेवकः।।
हर्यानन्दस्य शिष्यो हि राघवानन्ददेशिकः।
यस्य वै शिष्यतां प्राप्तो रामानन्दः स्वयं हरिः।।
तस्माद् गुरुवरालल्लब्ध्वा देवानामपि दुर्लभम्।
प्रादात्तुभ्यमहं तात गुह्यं तारक संज्ञकम्।।
एवं परम्परा सौम्य प्रोक्त श्रीसम्प्रदायिनाम्।
मन्त्रराजस्य चाख्यातिर्भूम्यामेवमवातरत्।।

श्रीअग्रदास उवाच-

कृष्णदासस्तु तच्छ्रुत्वा लेभे परम हर्षताम्।
साष्टांगं प्रणतिं कृत्वा वचनं चेदमब्रवीत्।।

श्रीकृष्णदास उवाच-

पीत्वा श्रीमुखवाक्यजन्यममृतं तापत्रयोद्धारकं,
श्रुत्वा वेदनिगूढ तत्वजनिकां वार्णी सम्पुल्लासिनीम्।
हित्वा मोक्षद रामतारकमिमं जाने न सारं परं,
नीत्वा कालमहं सुसाधकधिया वक्तुं न शक्नोम्यलम्।।१२१।।

श्रीअग्रदास उवाच-

यः पठेच्छ्रद्धया नित्यं पूर्वाचार्य परम्पराम्।
मन्त्रराजरतिं प्राप्य सद्यो रामपदं व्रजेत्।।२२।।

904/3033

अर्थ- **श्रीअग्रदासजी कहते हैं कि एकबार श्रीकृष्णदासजी ने सिहांसन पर विराजमान भगवान श्रीअनन्तानन्दजी को साष्टांग दण्डवत् प्रणाम करके गुरु- परम्परा पूछी। श्रीकृष्णदासजी ने कहा- भगवन्! आप यतियों में श्रेष्ठ हैं, मैं आपकी शरण में हूँ, आप मुझ पर कृपा करें। मैं पूर्वाचार्यों की परम्परा जानना चाहता हूँ। श्रीराममन्त्रराज को सर्वप्रथम किसने किसको प्रदान किया और मोक्षदायक यह मन्त्र पृथ्वी पर कैसे विख्यात हुआ। यह सुनकर दयानिधि श्रीअनन्तानन्दजी ने कहा- हे सौम्य! मन्त्रराज की परम्परा कहता हूँ सुनो, अपने परधाम में स्थित,अकारणकरुण, कमलनयन भगवान श्रीराम ने श्रीजानकी जी की सेवा से सन्तुष्ट होकर जीवों के कल्याण के लिए सर्वप्रथम उन्हें रामतारक-मन्त्र प्रदान किया, जीवों का दुःख दूर करने के लिए श्रीजानकीजी ने श्रीरामचरण- सेवक श्रीहनुमानजी को दिया। उनसे ब्रह्मा ने प्राप्त किया। कल्पान्तर में श्रीराम ने ही ब्रह्मा को दिया। उसका जप करके ब्रह्मा को सृष्टि रचने की शक्ति प्राप्त हुई।**

यह मन्त्र वेदत्रयी का सार है, उसकी परम्परा इस प्रकार है। श्री ब्रह्माजी, श्रीवशिष्ठजी, श्रीपराशरजी, श्रीवेदव्यासजी, श्रीशुकदेवजी, श्रीपुरुषोत्तमाचार्यजी, श्रीगङ्गाधराचार्यजी, श्रीसदाचार्यजी, श्रीरामेश्वराचार्यजी, श्रीद्वारानन्दजी, श्रीदेवानन्दजी, श्रीश्यामानन्दजी, श्रीश्रुतानन्दजी, श्रीचिदानन्दजी, श्रीपूर्णानन्दजी, श्रीश्रियानन्दजी,श्रीहर्यानन्दजी, श्रीराघवानन्दजी, भगवान श्रीरामानन्दाचार्यजी महाराज। उसके बाद देवदुर्लभ, गोप्य श्रीरामतारक मन्त्र को अपने गुरुदेव से प्राप्त कर मैंने तुम्हें प्रदान किया। भगवान श्रीरामानन्दाचार्यजी से ही इस पृथ्वी पर श्रीराममन्त्र का विशेष प्रचार-प्रसार हुआ। श्री कृष्णदास जी श्रीसम्प्रदाय की गुरु परम्परा को सुनकर अति प्रसन्न हुए और श्री गुरु चरणों में साष्टाङ्ग दण्डवत् करके बोले- भगवन्! रहस्यमयी

एवं त्रितापहारिणी आपकी अमृतमयी वाणी को सुनकर मैं कृतार्थ हुआ और यह समझ गया कि श्रीराममन्त्रराज से श्रेष्ठ दूसरा कोई सारतत्व नहीं है। श्रीअग्रदासजी महाराज का कथन है कि–जो लोग श्रद्धापूर्वक इस गुरु- परम्परा का नित्य पाठ करेंगे वे मन्त्रराज के प्रति प्रेम को प्राप्त कर शीघ्र ही रामधाम को जायेंगे।